वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

महाकवि कालिदासकृत रघुवंशम् महाकाव्य का प्रकृति सौंदर्य

[1]सत्यवती चौरसिया
शोधार्थी संस्कृत विभाग
[2]आशीष तिवारी
सहायक प्राध्यापक (शोध निर्देशक)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर (मध्य प्रदेश)

शोध सारांश

महाकवि कालिदासकृत रघुवंशम् महाकाव्य, में प्रकृति सौंदर्य का अद्भुत एवं रमणीय चित्रण दिखाई देता है। अतः हम महाकाव्य के अध्ययन से प्रकृति सौंदर्य का वर्णन करके यह कह सकते हैं, कि प्रकृति सम्राट महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों में सूर्य के उदय होते समय उसकी लालिमा का, कहीं हिमालय पर्वत का, कहीं वर्षा का, कहीं बादलों का, कहीं खेतों और खलियानों का, कहीं झरनों का,कहीं नदियों का, कहीं मिट्टी की भीनी-भीनी सुगंध का कहीं वनस्पतियों का, कहीं नृत्य करते हुए मयूर का कहीं आकाश में उड़ते हुए हंसों का सजीव चित्रण करके समस्त मानव जाति को यह महसूस करवाया है, कि प्रकृति और मानव का संबंध अटूट है। महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में प्रकृति की सजीवता दृष्टिगोचर होती है। संस्कृत साहित्य ही नहीं अपितु संपूर्ण भारतीय साहित्य में प्रकृति चित्रण की विशेष झलक बनी रही है प्रकृति और मानव का संबंध उतना ही पुराना है जितना की सृष्टि के उद्भव व विकास का इतिहास। महाकवि ने प्रकृति के सौंदर्य को मानव स्वभाव के सौंदर्य से जोड़ा है महाकवि कालिदास कृत रघुवंशम् महाकाव्य के,प्रकृति वर्णन से हमें जीवन जीने व प्रकृति प्रेम, सद्भावना आदि का जो अद्भुत ज्ञान प्राप्त हुआ है, वह अमूल्य है।

रघुवंशम् में कालिदास को जल के स्वभाव से शिक्षा मिलती है। जल तो प्रकृत्या शीतल है, उष्ण वस्तु के सम्पर्क से भले ही कुछ क्षण के लिए जल में उष्णता उत्पन्न हो जाए। इसी प्रकार महात्मा भी प्रकृति से क्षमाशील होते हैं, अपराध करने पर वे कुछ क्षण के लिए ही उद्विग्न होते हैं -

स चानुनीतः प्रणतेन पश्चान्मया महर्षिर्मुदतामगच्छत्।
उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य॥(१)

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

कवि की काव्य कला का प्रौणतम् रूप एवं सौंदर्य इस काव्य में देखा जाता है।

बीज शब्द

कालिदास, महाकाव्य, प्रकृति रघुवंश, मानव, सौंदर्य, जीवन।

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास भारत के श्रेष्ठतम कवियों में से एक थे। वे संस्कृत भाषा के महान सम्राट माने जाते हैं, इनको राजा विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्न में शामिल किया जाता था। श्रृंगार रस को इन्होंने प्रधान रस माना है। उनकी रचनाओं को एक बार पाठन कर लेने से अपने आप स्वयं भाव जागृत हो जाते हैं। इन्होंने अपने साहित्य में आदर्शवादी और नैतिक मूल्यों का विशेष ध्यान रखा है। महाकवि कालिदास ने अनेकों रचनाएं लिखी है जिनमें से कुछ बहुत ही सर्वश्रेष्ठ रचनाएं मानी जाती है इनकी प्रमुख रचनाएं -

महाकाव्य- कुमार संभवम्, रघुवंशम्
खंडकाव्य- मेघदूतम्, ऋतु संहारम्
नाटक- अभिज्ञान शाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्

परिचय - रघुवंशम् महाकाव्य कालिदास की एक उत्कृष्ट कृति है,सूर्यवंशी के 30 राजाओं का वर्णन इसमें 19 सरगों में किया गया है। रघुवंशम् महाकाव्य कवि कालिदास रघुवंशम् की वंशावली को निरूपित किया है। महाकवि कालिदास ने इसमें राजा दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम, कुश और अतिथि का विशेष वर्णन किया है। 19 सर्गों में से 6 सर्ग में राम का वर्णन किया गया है।

आदि कवि वाल्मीकि ने राम को नायक बनाकर अपनी रामायण की रचना की जिसका अनुसरण विश्व के कई कवियों और लेखकों ने अपनी-अपनी भाषा में किया और राम की कथा को अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया। महाकवि कालिदास ने भी वाल्मीकि का अनुसरण करके यद्यपि राम की कथा रची,परंतु इस कथा में उन्होंने किसी एक पात्र को नायक के रूप में नहीं

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

उभारा उन्होंने अपनी कृति रघुवंशम् में पूरे वंश की कथा रच डाली जो दिलीप से आरंभ होती है और अग्नि वर्ण पर समाप्त हो जाती है। अग्नि वर्ण के मरणोपरांत उसकी गर्भवती पत्नी के राज्य अभिषेक के उपरांत इस महाकाव्य की इतिश्री होती है।

रघुवंशम् रामायण का उपजीव्य माना जाता है। रघुवंशम् पर सबसे प्राचीन उपलब्ध टीका दसवीं शताब्दी के कश्मीरी कवि बल्लभ देव की है, किंतु सर्वाधिक प्रसिद्ध टीका मल्लिनाथ (1350 ई - 1450 ई) द्वारा रचित संजीवनी है। रघुवंशम् कथा के माध्यम से कवि कालिदास ने राजा के चरित्र आदर्श तथा राजधर्म जैसी विषयों का बड़ा सुंदर वर्णन किया है, रघुवंशम् सूर्यवंश के इस अध्याय का वह अंश भी है, जिसमें एक और यह संदेश है,कि राजधर्म का निर्वाह करने वाले राजा की कीर्ति और यश देश भर में फैलती है, तो दूसरी ओर चरित्रहीन राजा के कारण अपयश व वंश-पतन निश्चित है, भले ही वह किसी भी उच्च वंश का वंशज ही क्यों न रहा हो।

रघुवंशम् की कथा को सर्ग अनुसार इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं। प्रथम सर्ग में राजा दिलीप का चरित्र चित्रण वर्णित किया जाता है जिसमें पुत्र विहीन होने के कारण राजा अत्यंत दुखी होते हैं एवं इसके पश्चात राजा दिलीप और पत्नी सुदक्षिणा गुरु वशिष्ट के आश्रम में पहुंचते हैं और संतान उत्पत्ति न होने का उपाय पूंछते हैं। गुरु वशिष्ठ अपने आश्रम में विद्यमान नंदिनी गौ की सेवा करने के लिए राजा दिलीप को सलाह देते हैं।

द्वितीय सर्ग में दिलीप की गौ भक्ति का वर्णन किया जाता है राजा दिलीप बहुत ही पूर्ण निष्ठा वी एकाग्रचित से नंदिनी की सेवा में संलग्न हो जाते हैं और नंदिनी के साथ ही पूरा समय व्यतीत करते हैं जब नंदिनी खाती है तब राजा दिलीप खाते हैं। और जब नंदिनी सोती है तब राजा दिलीप सोते हैं इस प्रकार अपनी दिनचर्या को नंदिनी गाय की सेवा में पूर्ण समर्पित किए रहते हैं। इस प्रकार कुछ दिन बीतने पर नंदिनी राजा की सेवा और कर्तव्य निष्ठा की परीक्षा लेना चाहती है। रघुवंशम् महाकाव्य के कई श्लोकों में, प्रकृति का मधुर और सुंदर चित्रण किया गया है। महाकवि कालिदास ने प्रकृति प्रेम का परिचय दिया है, महाकवि कालिदास प्रकृति

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

के महान उपासक माने जाते हैं। यह प्रकृति के अनन्य प्रेमी है।,महाकवि कालिदास ने रघुवंशम् महाकाव्य में प्रकृति का चित्रण बहुत ही सुंदर और मनोरम ढंग से किया है। जिसका वर्णन इस प्रकार है -

महाकवि कालिदास के इस श्लोक में प्रगति में सजीवता प्रकट होती है जो अन्य कवियों से अभिन्न अर्थात पर्वतीय झरनों के जल कणों से युक्त शीतल तथा, वृक्षों के धीरे-धीरे हिलते हुए फूलों की गंध माला अर्थात मंद सुगंध युक्त वायु छत्र रहित अतःधूप से मुरझाए हुए एवं सदाचार से पवित्र राजा दिलीप की सेवा करने लगा।

महाकवि कालिदास ने चतुर्थ सर्ग में भी प्रकृति का सुंदर वर्णन करते हुए कहा है कि शरद ऋतु में हंस की पंक्तियों में कुमुद नामक स्वेत कमल, कमल से युक्त सरोवरों से ऐसा मालूम पड़ता है कि मानो रघु के यश की समृद्धि फैली हुई है। प्रकृति सम्राट महाकवि कालिदास प्रातः काल तथा पवन का सुंदर वर्णन करते हुए कहते हैं कि प्रातः काल की पवन, वृक्षों के कोमल पुष्पों को गिरा रही है और सूर्य की किरणों से खिले हुए कमलों को छूता हुआ प्रवाह कर रहा है मानो तुम्हें सोया हुआ देखकर वह तुम्हारे मुख की स्वाभाविक सुगंधि को दूसरों से प्राप्त करने की इच्छा कर रहा है।

वृन्ताच्छलयं हरति पुष्पमनोकहानां (२)
संवृज्यते सरसिजैररूणांशुभिन्नै:
स्वाभाविकं पर गुणेन विभातवायु:
सौरम्यमीप्सुरिव ने मुख मारूतस्य।।

महाकवि कालिदास पंचम सर्ग में वृक्षों के पत्तों का उसकी बूंद का वर्णन करते हुए कहते हैं कि लाल वर्ण की वृक्षों के पत्तों पर गिरी हुई हार की स्वच्छ मोतियों के समान निर्मल ओस की बूंदे लाल -लाल होठों पर वर्तमान दांतों की चमक सहित तुम्हारे मुस्कुराने की तरह सुंदर लग रही है।

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

ताम्रोदरेषु पतितं तरूपल्लवेषु
निर्घौतिहारगुलिकाविशदं हिमाम्भः।
आभाति लब्वपरभागतयाधरोष्ठे
ललास्मितं सदशनार्चिरिव त्वदीयम्

इसी प्रकार से रानी इंदुमती के स्वयंवर के समय वर्षा ऋतु का और गोवर्धन पर्वत तथा मयूर की नृत्य का सुंदर वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास कहते हैं कि वर्षा ऋतु में गोवर्धन पर्वत की सुहावनी गुफाओं में जल की फुहार से भीगी हुई शिलाजीत की गंध वाली पत्थर की चट्टानों पर बैठकर मयूरों की नृत्य को तुम देखो।

महाकवि कालिदास ने नवें सर्ग में, बसंत ऋतु के आगमन का सुंदर वर्णन किया है। कालिदास ने तेरहवे सर्ग में, भीगी हुई मिट्टी की सुगंध तथा खिले हुए पुष्पों और मयूर के बोलने का वर्णन किया है। महाकवि ने तेरहवे सर्ग में माता सीता की वियोग में पुरुषोत्तम राम की व्यथा का सुंदर वर्णन उनकी उपमा वर्षा ऋतु से करते हुए किया है।

महाकवि कालिदास को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है महाकवि ने प्रकृति के श्रेष्ठ तत्वों को ग्रहण करने के लिए प्रकृति के सुंदर तत्वों से सादृश्य स्थापित करते हैं । रघुवंशम् में राजा रघु के मुख -सौंदर्य के वर्णन के लिए भी प्रकृति के सुंदरतम एवं प्रसिद्ध उपमान चंद्र का आश्रय लेते हैं।

प्रसादसुमुखे तस्मिश्चन्द्रे च विशदप्रभे! तदा चक्षुष्मता
प्रीतिरासीत्समरसा द्वयोः।। (३)

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं की प्रकृति सम्राट महाकवि कालिदास ने अपनी काव्य में सूर्य के उदय होते समय उसकी लालिमा का, कहीं बादलों का,कहीं वृक्षों का,कहीं हिमालय पर्वत का,कहीं खेतों और खलिहानों का, कहीं वनों और वनस्पतियों का नृत्य करते मयूरों का,आकाश में उड़ते हंसों आदि का ऐसा सजीव चित्रण किया है,मानो स्वयं प्रकृति ही सजीवता प्रकट हो रही है।

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

संस्कृत साहित्य ही नहीं अपितु संपूर्ण भारतीय साहित्य में प्रकृति चित्रण की विशेष परंपरा रही है प्रकृति और मानव का संबंध उतना ही पुराना है जितना की सृष्टि के उद्भव और विकास का इतिहास प्रकृति की गोद में ही प्रथम मानव शिशु ने आंखें खोली थी और उसी की गोद में खेल कर वह बड़ा हुआ साहित्य मानव जीवन का प्रतिबिंब होता है अपनी दैनिक जीवन के कृत्यों से जब मानव का मन ऊब जाता है, तब मानव प्रकृति का आश्रय लेता है। प्रकृति अपने आप में सुंदर है और मानव स्वभाव से ही सौंदर्य प्रेमी माना गया है। इसलिए प्रकृति हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अविभाज्य अंग है, मानव का संबंध उतना ही पुराना है,जितना कि इस सृष्टि के आरंभ का इतिहास पुराना है। धरती पर जीवन जीने के लिए ईश्वर से हमें बहुमूल्य और कीमती उपहार के रूप में प्रकृति मिली है। प्रकृति हमारा पोषण एक मां की तरह करती है और बहुमूल्य चीज हमें प्रकृति निशुल्क प्रदान करती है। इस प्रकार प्रकृति और हमारे जीवन का घनिष्ठ संबंध है। अतः प्रकृति का संरक्षण करना प्रत्येक मानव जाति का धर्म है।

महाकवि कालिदास की विलक्षण प्रतिभा की ओर संकेत करते हुए किसी ने सत्य ही लिखा है-

मनुष्याणां रक्षणे सम्यक् शिक्षा- संस्कार- साधने।
नूनमेकाकिनी दृष्टिः कालिदास राजते।। (४)

संदर्भ ग्रंथ सूची

(१) रघुवंश महाकाव्य 13।24, 25
(२) 4.18 रघुवंशम्
(३) 5.54 रघुवंशम्
(४) रघुवंशम् महाकाव्य (मोतीलाल बनारसी दास) १७/७१
(५) रघुवंशम् महाकाव्य (मोतीलाल बनारसी दास) १७/०६
(६) रघुवंशम् महाकाव्य (मोतीलाल बनारसी दास) १६/५४
(७) रघुवंशम् महाकाव्य (मोतीलाल बनारसी दास) १६/६४
(८) रघुवंशम् महाकाव्य (मोतीलाल बनारसी दास) १७/०६